Vol 7 Issue 5 June 2017

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldisrj.lbp.world

ISSN: 2230-7850 IMPACT FACTOR : 5.1651(UIF)

INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | JUNE - 2017

पितृसत्ता के सन्दर्भ में नारीवादी दृष्टिकोण : एक समाजशास्त्रीय समीक्षा

बालक राम राजवंशी
सहायक प्रोफेसर (गैस्ट) , हे.न.ब.ग.(केन्द्रीय)वि.वि,बी.जी.
आर. परिसर पौड़ी गढ़वाल,उत्तराखण्ड.

साराँश :

'पितृसत्ता' शब्द अँग्रेजी के 'पेट्रिआर्की' का हिन्दी रूपान्तरण है जो पेट्रिआर्क शब्द से बना है। पेट्रिआर्क का अर्थ प्राधिधर्माध्यक्ष होता है। यह पद–श्रेणी व्यवस्था पर आधारित कुछ चर्च के बिशपों में से उच्च पद पर आसीन किसी खास बिशप के लिए प्रयुक्त होता है। इस तरह यहाँ पेट्रिआर्की शब्द उसके पद या प्राधिकार को व्यक्त करता है। नारीवादी चिन्तकों ने पितृसत्ता को एक ऐसे आधार के रूप में देखा है जिसके ऊपर अधिकांश आधुनिक समाज का ढाँचा स्थापित होता है। उनके अनुसार लैंगिक समानता को प्राप्त करने के लिए इस मॉडल को त्यागना आवश्यक एवं अपरिहार्य है। महिलाएँ लगातार अपने अधिकार के लिए संघर्ष कर रही हैं एवं कभी–कभी तो वे पुरूषों के अधीनता के बीच शक्तिविहीन एवं निःसहाय होकर जिंदा रहने के लिए जद्दोजहद करती हुई देखी जाती हैं। बहरहाल कोई महिला पितृसत्ता पर विजय प्राप्त करना चाहती है या नहीं, यह इच्छा तो केवल पुरूषों द्वारा स्थापित व्यवस्था से बाहर एवं स्वतन्त्र रहकर ही जागृत हो सकेगीं। यद्यपि आज बहुत सी महिलाएँ कारखानों में नौकरी के साथ–साथ राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका का भी निर्वहन कर रही हैं तथापि यह इन प्रगतिशील एवं सफलता प्राप्त करने में सक्षम महिलाओं का उन पुरूषों के साथ चलने वाला एक निरन्तर संघर्ष ही होता है जिसे महज जैविक प्रकृति के चलते अपनी शक्ति संपन्नता को स्थापित कर लिया है। पुरूषों को समाज में अपना स्थान प्राप्त करने के लिए महिलाओं के समान संघर्ष नहीं करना पड़ता है। हमेशा यही सम्भावना बनी रहती है कि पुरूष ही समाज के नेतृत्वकर्ता बनेंगे क्योंकि पितृसत्ता में इसी तरह की बात होती है।पितृसत्ता मुख्यतः दो तरीकों से लोगों पर नियन्त्रण स्थापित करता है। पहला वातावरण का निर्माण करके एवं दूसरा जनसंचार माध्यमों से सोचने–समझने की क्षमता पर नियन्त्रण स्थापित कर सके (भसिन,2005: 5)।

मुख्य शब्द : पितृसत्ता,नारीवाद,दृष्टिकोण, पुरूष–प्रधानता।

प्रस्तावना :

प्रस्तुत लेख का प्रमुख उद्देश्य पितृसत्ता पर विभिन्न नारीवादी दृष्टिकोणों को जानना है। इस उद्देश्य हेतु प्रस्तुत लेख में वर्णात्मक शोध–प्ररचाना का प्रयोग करते हुये समीक्षा की गई है। पुरूष के द्वारा प्रभुत्व का सबसे बड़ा जो आधार है वह यौनिकता है एवं इसी यौन के आधार पर महिलाओं को उनके विस्तृत मानव अधिकार एवं प्रतिष्ठा से वंचित रखा है। यह दृष्टिकोण नारीवाद के आमूल परिवर्तनवादी (रेडिकल) दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ है।

पितृसत्तात्मक सोच के अन्तर्गत महिलाओं को वस्तु के रूप में देखने की प्रवृत्ति होती है तथा यह महिलाओं को पूरी तरह से पुरूषों के नियन्त्रण में देखना पसंद करता है। उन्नति कर रही महिलाओं के ऊपर इसमें कड़ा प्रहार किया जाता है। पूँजीपति वर्ग के अन्दर तो यह समस्या और भी गहरी है। बहुत सी महिलाएँ न्यूनतम मजदूरी पर अपने काम में लगी हुई हैं। बच्चों के लालन–पालन के कार्य की तो कोई गिनती ही नहीं है। महिलाओं को अनेकों तरह के उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। इनमें से एक गम्भीर एवं परेशान करने वाला तरीका अश्लील साहित्य एवं सिनेमा है। यह दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है तथा और भी घृणित होता जा रहा है, इसने महिलाओं को काफी कमजोर किया है। पितृसत्ता एक महत्वपूर्ण तकनीक के रूप में फूट डालने एवं अधीन बनाने की नीति का भी प्रयोग करता है। पुरूषों एवं महिलाओं के बीच तो विभाजन स्पष्ट ही है। आधुनिक समय का सम्पूर्ण प्रयास लोगों को हर सम्भव तरीके से विलग करना है। सच्ची सामुदायिकता की भावना तो अब नहीं के बराबर ही है। यह ऐसा दिखावा करके लोगों को कमजोर बनाता है एवं उसका शोषण करता है। लेकिन इस तरह की उग्र प्रतियोगिता वाणिज्य व्यवसाय के लिए तो उपयुक्त ठहरायी जा सकती है पर दूसरे क्षेत्रों में इसे लागू करना ठीक नहीं है।

पितृसत्ता की जड़ें काफी हद तक धर्म में भी होती है। चाहे बाइबिल हो या मनुस्मृति या कोई भी ऐसा ग्रन्थ जिसे कोई धर्म स्वीकार करता है उसमें पुरूषों को ही सभी प्रकार का दायित्व सौंपा गया है। इसाई लोग जिस बाइबिल में पूरी आस्था रखते हैं उसमें पुरूषों के प्रति महिलाओं के समर्पण को दर्शाया गया है। मनुस्मृति में भी कहा गया है कि प्रत्येक महिला को अपनी पति को देव तुल्य मानना चाहिए। उसके सतीत्व की पहचान भी इसी बात से होती है कि वह अपने पति के प्रति कितनी समर्पित है। संस्कृति के द्वारा मन–मस्तिष्क में स्थापित इस विश्वास एवं आस्था की वजह से महिलाएँ उस क्षमता एवं ताकत के साथ खड़ी नहीं हो पाती हैं जो उन्हें लाभ का अवसर प्रदान करे।

पितृसत्ता को पारिवारिक परम्पराओं में भी देख सकते हैं। हम देख सकते हैं कि कैसे विवाह के पश्चात् महिलाएँ अपने नाम में पति के नाम का टाइटल जोड़ती हैं तथा बच्चों के नामकरण भी पिता के नाम के अनुरूप ही होता है। आज कई महिलाएँ अपने विवाह पश्चात् के नाम के साथ अपने विवाह पूर्व नाम को बनाए रखना पसन्द कर रहीं हैं ताकि वे अपनी स्व–पहचान को कायम रख सकें। इसी तरह 'श्री' एवं 'श्रीमती' के संदर्भ में भी हम देखते हैं कि

पुरूष की प्रभावी भुमिका होती है।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था के अन्दर महिलाओं को काबू में रखने के लिए विभिन्न प्रकार के हिंसक कृत्यों का भी प्रयोग हो सकता है। इतना ही नहीं इस प्रकार के हिंसक गतिविधियों को वैध भी मान लिया जाता है। नारीवादी चिंतकों के अनुसार पितृसत्तात्मक व्यवस्था के अन्दर महिलाओं के विरूद्व हिंसा का प्रयोग अत्यधिक ही नहीं बल्कि व्यवस्थित रूप से भी होता है (भसिनः 2000, 22)।

फिर भी, पितृसत्ता का तात्पर्य केवल पुरूषों का आधिपत्य या पुरूषों का शासन ही नहीं होता है क्योंकि यह एक चिरंतन सत्य है कि कोई भी विभेदकारी व्यवस्था बिना उत्पीड़ितों के सहयोग के टिक नहीं सकता है।वस्तुतः इन उत्पीड़ित लोगों में से ही कुछ लोग इससे लाभ उठा रहे होते हैं। ठीक यही बात पितृसत्तात्मक व्यवस्था के साथ भी है। हम देखते हैं कि अब महिलाएँ भी सत्ता में हैं,वे कुछ सुविधाओं का भी आनन्द उठा रही हैं। किन्तु इन सबके बावजूद भी सच्चाई यही है कि अभी भी व्यवस्था पर पुरूषों का ही आधिपत्य है।

महिलाओं के ऊपर पुरूषों के नियन्त्रण को 'आधिपत्य के साथ प्रभुत्व' के रूप में वर्णन किया जा सकता है।यहाँ पर आधिपत्य से तात्पर्य शासक हितों को सार्वभौमिक हित के रूप में प्रस्तुत करने से है। यह सहमति का निर्माण कर अपना प्रभुत्व स्थापित करता है।

पितृसत्ता के सम्बन्ध में विभिन्न नारीवादी दृष्टिकोण

'नारीवाद' को सामान्यतः औरतों के शोषण एवं उत्पीड़न के खिलाफ एक एकीकृत आवाज के रूप में देखा जाता है। किन्तु वास्तविकता में देखें तो पितृसत्ता को लेकर नारीवाद के अन्दर एक समान दृष्टिकोण नहीं है। हालाँकि नारीवाद की सभी शाखाएँ पितृसत्ता को औरतों के शोषण के लिए जिम्मेवार मानती हैं तथापि इसके समाधान को लेकर उनके विचारों में अन्तर पाया जाता है।

उदारवादी नारीवाद (Liberal Feminism) का मुख्य विचार यह है कि सभी मनुष्य ईश्वर द्वारा समान रूप से बनाए गए हैं एवं सबके अधिकार समान हैं। इसके अनुसार महिलाओं के शोषण के मुख्य कारण वे सामाजिक तौर–तरीके हैं जो पुरूषों को हमेशा सबल स्थिति में रखते हैं। उदारवादी नारीवादियों के अनुसार महिलाओं के अन्दर भी पुरूषों के समान मानसिक क्षमता विद्यमान होती है और इसीलिए सामाजिक,आर्थिक एवं राजनीतिक प्रत्येक क्षेत्र में उन्हें भी समान अवसर दिया जाना चाहिए।

उदारवादी नारीवादियों के अनुसार सामाजिक हितों से सम्बन्ध रखने वाले मुद्दों के ऊपर व्यक्तिगत अधिकारों को वरीयता दी जानी चाहिए। यह दृष्टिकोण काफी हद तक जॉन स्टुअर्ट मिल के नारवादी विचारों में साम्य रखता है जिन्होंने सरकार को नागरिकों के निजी जीवन में हस्तक्षेप नहीं करने की सलाह दी थी। उदारवादी नारीवादी विचारक पितृसत्ता के अन्दर उपस्थित अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती हैं जिसमें लिंग के आधार पर इस तरह से कार्यों का विभाजन किया गया है जो महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों का ज्यादा पक्षपोषण करती हैं। अतः उदारवादी नारीवाद महिलाओं को इस उत्पीड़नकारी लैंगिक भूमिका से स्वतन्त्र कराना चाहती हैं। उदारवादी नारीवाद के अन्दर दो पीढ़ियाँ रही हैं : शास्त्रीय उदारवाद एवं लोक कल्याणकारी उदारवाद। शास्त्रीय उदारवाद के अनुसार राज्य को नागरिक स्वतन्त्रताओं की रक्षा करनी चाहिए और साथ ही बाजार व्यवस्था में लोगों को अपनी पसन्द को चुनने का अधिकार भी दिया जाना चाहिए। दूसरी तरफ लोक कल्याणकारी उदारवादियों के अनुसार राज्य को महज नागरिक स्वतन्त्रताओं की सुरक्षा करने के बजाय आर्थिक न्याय की स्थापना पर भी बल देना चाहिए। ये समाज में व्याप्त असमानताओं को समाप्त करने के लिए सामाजिक सुरक्षा एवं स्कूल,पाठशाला अस्पताल आदि की तरह सरकारी कार्यक्रमों की माँग करते हैं।

उदारवादी नारीवादी उन विधायी कृत्यों का समर्थन करती हैं जो महिलाओं के ऊपर स्थापित प्रतिबन्धों को हटाने का कार्य करती हैं। इस प्रकार के विधानों में महिलाओं के लिए समान अधिकारों की माँग की जाती है जिसमें रोजगार के समान अवसर समान कार्य के लिए समान वेतन आदि भी सम्मिलित हैं।

रेडिकल नारीवाद ने उस पूरी विचारधारा एवं सामाजिक संरचना का विश्लेषण प्रस्तुत किया जिसने पुरूषों के हित में महिलाओं को अधीन बना दिया था। इस संरचना को इसने पितृसत्तात्मक–व्यवस्था का नाम दिया। 1970 के दशक में जैसे–जैसे इस विश्लेषण का प्रसार हुआ रेडिकल नारीवादियों ने बच्चों के लालन–पालन एवं देखभाल आदि को लेकर प्रश्न उठाने शुरू किये। स्त्रियों के बीच बच्चों के लालन–पालन एवं देखभाल आदि को लेकर प्रश्न उठाने शुरू किए। स्त्रियों के बीच समलैंगिक सम्बन्ध (लेस्बियनिज्म) रेडिकल नगरवादियों के लिए एक गम्भीर लैंगिक एवं राजनीतिक मुद्दा बन गया। विपरीत लैंगिक सम्बन्ध (हेट्रोसेक्सुअल) रखने वाली महिलाओं को 'शत्रु के साथ हमबिस्तर होने वाली औरत' के रूप में देखा जाने लगा। इसके अतिरिक्त लेस्बियनिज्म को महत्व दिया जाने लगा क्योंकि कुछ रेडिकल नारीवादी इस तरह के यौन–सम्बन्धों को स्त्री–केन्द्रित एवं स्त्रियों द्वारा शुरू की गई यौन क्रिया के रूप में देखने लगी। रेडिकल नारीवादियों के अनुसार महिलाओं के साथ होने वाला उत्पीड़न एक मौलिक समस्या है जो दूसरे प्रकार के उत्पीड़न के रूप में सामाने आता है। उनके अनुसार वैश्यावृत्ति में संलग्न महिलाएँ भी अपनी इच्छा से ऐसा नहीं करती हैं बल्कि यहाँ भी वे उत्पीड़न की ही शिकार होती हैं।

इनके अनुसार चूँकि महिलाओं के साथ होने वाला अत्याचार लोगों की सोच से जुड़ा हुआ है इसीलिए महज समाज की संरचना में परिवर्तन लाकर इससे निजात नही पाया जा सकता है। बलिक इसके लिए पुरूषों के व्यवहार में परिवर्तन लाना पड़ेगा तथा पुरूषों एवं महिलाओं को समान महत्व देनाा पड़ेगा।

रेडिकल नारीवादियों ने जागृति का प्रसार कर अथवा कुछ उद्देश्यों को लेकर छोटे संगठनों के रूप में अपने को संगठित किया है। 1970 एवं 1980 के दशक में इस तरह की क्रियाएँ काफी सामान्य थी। पर कई मामलों में 1970 एवं 1980 के दशक में रेडिकल नारीवादियों द्वारा स्थापित संगठन राज्य के दमन अथवा इसके प्रभाव में आकर निष्प्रभावी हो गई। आस्ट्रेलिया में 1980 के दशक में कई नारीवादी संगठनों ने सरकारी धन लेना स्वीकार कर लिया तथा 1996 के कंजरवेटिव शासन के चुनाव ने इन संगठनों को पंगू बना कर रख दिया।

रेडिकल नारीवादियों के अनुसार राज्य एवं समाज उत्पीड़नकारी संस्थाएँ है जो पितृसत्ता को और मजबूत करता है। कुछ उग्र–नारीवादियों के अनुसार पितृसत्ता के अन्तर्गत केवल महिलाओं का ही शोषण नहीं होता है बल्कि पुरूषों का भी शोषण होता है। इसमें प्रभावशाली पुरूषों द्वारा महिलाओं के साथ–साथ कमजोर एवं निष्प्रभावी पुरूषों का भी उत्पीड़न होता है। अतः रेडिकल नारीवादी विचारक इस तंत्र को जड़ से मिटाना चाहती हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार रेडिकल नारीवादी पितृसत्ता के स्थान पर मातृसत्ता की स्थापना करना चाहती हैं इसीलिए कुछ लोग मानते हैं कि रेडिकल नारीवादी महिलाओं के साथ होने वाले सारे अत्याचार की जड़ पितृसत्ता में ही देखती हैं और इसलिए पूरी संरचना को बदलने का आह्वान करती हैं।

समाज में महिलाओं का उत्पीड़न सीधे तौर पर किसी व्यक्ति के इरादतन किये गये कृत्यों से नहीं होता है। बल्कि इसके पीछे वह सामाजिक,राजनीतिक एवं आर्थिक संरचना कार्य करती है जिसमें कि वह व्यक्ति रह रहा होता है। व्यक्ति की समस्त पहचान उत्पादन पर निर्भर करता है। हमारी पहचान इस बात से निर्धारित होती है कि हम क्या उत्पादन करते हैं। चूँकि महिलाओं को दोयम दर्जे की भूमिका में रखा गया है अतः आर्थिक एवं सामाजिक रूप से इस गौण भूमिका के कारण इनकी छवि नकारात्मक बनी है।

चूँकि मार्क्सवादी नारीवादी घरेलू कार्यों के प्रति लैंगिक विभाजन को पसन्द नहीं करती हैं तथा सबको कार्य–स्थल के रूप में ही देखती हैं

इसीलिए यहाँ समान कार्य के लिए समान वेतन का विचार सामने आता है। इसलिए कई मार्क्सवादियों ने तुलनात्मक कार्यों के आधार पर चाहे पुरूष हो या महिला सबको समान पारिश्रमिक देने की माँग रखी है। मार्क्सवादी नारीवादी मुख्यतः कार्य–स्थलों पर पितृसत्ता के प्रश्न पर विचार करती हैं। हालाँकि इसका तात्पर्य यह नहीं है कि परिवार के अन्दर घरेलू कार्यों में वे इसकी उपस्थिति को नजरअन्दाज कर देते हैं। बल्कि उनका कहना है कि कार्य–स्थल पर उत्पीड़न का अन्त होने से स्वतः ही परिवार से भी पितृसत्ता का लोप हो जाएगा।

समाजवादी नारीवादी पूँजीवाद एवं पितृसत्ता के विचारधारा को चुनौती देती हैं। रेडिकल नारीवादियों की भाँति ही ये भी मानती हैं कि यद्यपि वर्ग,नस्ल,नृजातीयता एवं धर्म आदि के आधार पर महिलाओं के बीच विभाजन होता है तथापि इन सबके बावजूद एक महिला के रूप में वे सभी एक ही प्रकार के उत्पीड़न का सामना करती है। इस उत्पीड़न की समाप्ति के लिए ये वर्ग एवं जेंडर के समाप्ति की बात करती हैं। इनके अनुसार राजनीतिक क्षेत्रों में महिलाओं को पुरूषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर कार्य करना चाहिए। उनके बीच एक गठबन्धन होना चाहिए तथा जीवन के हर क्षेत्र में दोनों को एक दूसरे को समान मानना चाहिए। उदारवादी नारीवादी महिला के व्यक्तिगत अधिकार पर जोर देती हैं किन्तु इनसे अलग हटकर समाजवादी नारीवादी नस्ल,नृजातीय एवं अन्य दूसरे विभेदों से सम्बन्धित पहलुओं पर आधारित समुदाय में सामाजिक सम्बन्धों के विस्तृत संदर्भ में अधिकार की बात करती है। दूसरी तरफ समाजवादी इसे मार्क्सवाद एवं नारीवाद के बीच बेमतलब का सम्बन्ध कहती हैं। हर्टमैन के अनुसार मार्क्सवादियों की यह जानने की दिलचस्पी कि महिलाएँ पुरूषों के लिए या पूँजीवादियों के लिए काम करती हैं केवल बहकाने वाला बहस है। उनके अनुसार यह कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे बदला नहीं जा सकता है। उनके अनुसार मार्क्सवाद लैंगिक समस्या को समझने में असफल रहा है। और इसीलिए समस्या को देखते हुए एक नारीवादी समझ आवश्यक हैं।

हर्टमैन ने पितृसत्ता को भौतिकवादी आधार के अन्तर्गत स्थापित करने का प्रयास किया है।

एक विचारधारा के रूप में पितृसत्ता किसी निश्चित संरचना के द्वारा कायम रहती है। वाल्बी (1970) ने इस तथ्य को उजागर किया है कि महिलाओं की अधीनता को बनाए रखने के लिए पितृसत्ता लिंग के आधार पर असमानता को बनाए रखने का कार्य करती हैं। अपने लेख में उन्होंने दर्शाया है कि कैसे निजी एवं सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में यह अलग–अलग तरीके से कार्य करता है, किन्तु दोनों जगह इसका मकसद समान ही रहता है। इन्होंने अपने विश्लेषण में बताया है कि पारिवारिक क्रियाकलाप एवं घरेलू स्तर पर होने वाला उत्पादन महिलाओं के आधुनिकीकरण हेतु आवश्यक एक स्थान का निर्माण कर देता है। किन्तु साथ ही वे यह भी कहती हैं कि केवल घरेलू क्षेत्र ही एकमात्र ऐसा क्षेत्र नहीं होता है जहाँ महिलाओं के शोषण का आधार तैयार होता है। वह दर्शाती है कि कैसे पितृसत्ता की अवधारणा निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों में महिलाओं के आपसी संबंधों के द्वारा ही उसे अधीन बना लेता है। उनके अनुसार इस संरचना के अन्दर अधीनता को स्थापित करने में खुद भी बराबर की साझेदारी निभाती हैं तथा स्वयं ही इस अधीनीकरण को बनाए रखना का कार्य करती हैं (वाल्बी :1990,28)।

एक और नारीवादी चिंतक कैट मिलेट ने भी एक नए तरीके से पितृसत्ता का विश्लेषण किया है। वह कहती हैं कि जितने भी समाज को हम जानते हैं उन सब में लिंग के आधार जो भी सम्बन्ध होते हैं सभी शक्ति पर आधारित होते हैं और इसलिए वे सभी राजनीति के अन्तर्गत आते हैं। यह शक्ति–सम्बन्ध जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं के ऊपर पुरूषों के प्रभुत्व को स्थापित कर देता है। उनके अनुसार समाज में लैंगिक प्रभुत्व काफी हद तक सभी जगह एक समान होता है और इसीलिए यह स्पष्ट रूप से दिखाई भी देता है। यह हमारी संस्कृति के अन्दर अत्यंत विस्तृत विचारधारा है एवं शक्ति की मौलिक अवधारणा को प्रस्तुत करता है। इसके अनुसार हर तरह की सामाजिक क्रियाओं में महिलाओं के ऊपर मूलतः पुरूषों की पितृसत्तात्मक शक्ति स्थापित है तथा यह शक्ति की औपचारिक संस्थाओं से कहीं अधिक विस्तृत एवं परे है, इसके सामने वर्गीय एवं नस्लीय विभेद भी कुछ नहीं है।

समाज में पितृसत्ता की स्थापना एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया के द्वारा होता है। बचपन से ही परिवार के अन्दर समाजीकरण के द्वारा बच्चों में यह भावना डाली जाती है तथा आगे चलकर शिक्षा,साहित्य,धर्म आदि के द्वारा इसे स्थापित किया जाता है। पितृसत्ता के अन्तर्गत सार्वजनिक क्षेत्र में जो भी भेदभाव देखा जाता है वह भी पारिवारिक एवं व्यक्तिगत क्षेत्र से पृथक नहीं होता है। वस्तुतः सार्वजनिक क्षेत्र में तो सार्वजनिक संस्थाओं के पास ऐसी कोई शक्ति ही नहीं है कि वह महिलाओं का दमन कर सके। यह तो पारिवारिक क्षेत्र के अन्तर्गत स्थापित पितृसत्तात्मक व्यवस्था है जो सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं को दोयम दर्जे की भूमिका में ला खड़ा करता है। उदाहरण के लिए हम भारत में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं को पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया गया है। लेकिन क्या पंचायतों में महिलाओं को पुरूषों के समान शक्ति होती हैघ क्या वे अपनी शक्ति का प्रयोग करने में स्वतन्त्र होती हैंघ निश्चित रूप से इसका उत्तर नकारात्मक ही है। यहाँ भी उसकी आवाज को नहीं सुना जाता है। वे अपने पुरूष प्रतिपक्षियों से कभी भी उस तरह का सम्मान प्राप्त नहीं कर पाती हैं। वस्तुतः वहाँ उनका प्रतिनिधित्व तो महज संवैधानिक प्रावधानों की खानापूर्ति ही होती है। सच्चाई तो यह है कि वहाँ भी उसके कार्यो एवं शक्तियों का निर्वहन पुरूष ही करते हैं।

इस प्रकार से निजी क्षेत्र की पितृसत्तात्मक संरचना एवं सार्वजनिक क्षेत्र की पितृसत्तात्मक संरचना दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों ही जगह प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पुरूष के द्वारा ही महिलाओं के ऊपर प्रभुत्व का प्रयोग किया जाता है।

क्रिस्टन डेल्फी के अनुसार विवाह एक प्रकार के श्रम का समझौता है जिसके द्वारा पुरूष महिलाओं के श्रम का शोषण करता है तथा आर्थिक क्षेत्र में उसका स्वामी बन जाता है। चूँकि अधिकांश महिलाएँ बिना वेतन वाले इस श्रम में संलग्न होती हैं इसीलिए रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति बद्तर ही होती है। घर के अन्दर महिलाओं का यह शोषण पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली से बाहर होता है इसीलिए यह दलील देती हैं कि महिलाओं के इस उत्पीड़न की सच्ची भौतिकवादी व्याख्या हेतु हमें वर्ग–संघर्ष एवँ पूँजीवाद से अलग हटकर सोचना पड़ेगा क्योंकि इस शोषण का अलग भौतिकवादी आधार है जो महिलाओं द्वारा बिना वेतन के किए जाने वाले घरेलू श्रम में निहित है।

पितृसत्ता मूलतः पुरूष के हिंसा एवं महिलाओं की सेक्सुअलिटी पर नियन्त्रण पर आधारित है। विवाह कोई सेक्सुअल या भावनात्मक स्वतन्त्रता प्रदान नहीं करता है बल्कि प्रेम के नाम पर एक प्रभुत्व को स्थापित कर देता है। इस प्रकार परिवार के अन्दर पितृसत्तात्मक शक्ति–सम्बन्ध प्रबल होता है और इसी वजह से रेडिकल नारीवादी महिलाओं के उत्पीड़न के समाधान हेतु पारिवारिक व्यवस्था के ही उन्मूलन की बात करती है। समाज में विद्यमान कामवासना भी पितृसत्तात्मक समाज का ही एक लक्षण है। यह एक ऐसी दुनिया का उत्पाद कहा जा सकता है जहाँ सत्ता पर पुरूषों का अधिकार रहता है तथा महिलाएँ आर्थिक रूप से उन पर आश्रित रहती हैं।

एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति की महिलाओं एवं उनके उत्पीड़न के स्वरूप में अन्तर होता है। नारीवादियों ने महिलाओं के अधीनीकरण के पीछे जिम्मेवार उस मौलिक कारण का पता लगाया जिसका कोई इतिहास नहीं है। वे मानती हैं कि महिलाओं की सबसे बड़ी दुश्मन पितृसत्ता ही है। जिसकी वजह से महिलाएँ हर प्रकार के दमन एवं उत्पीड़न को सहन कर लेती हैं क्योंकि उन्हें सच्चाई का पता नहीं होता है। पश्चिम की महिलाओं ने पितृसत्ता के खिलाफ मुहिम छेड़ दी हैं। वे पुरूषों को शोषक मानती हैं तथा एक समतावादी समाज की स्थापना के लिए कार्य कर रही हैं। पर भारत में स्थिति इससे बिल्कुल अलग दिखाई देती है। भारतीय संस्कृति में परम्परा ,धर्म एवं दूसरे अन्य तरीकों के द्वारा इस पवित्रता नारी की विचाारधारा का प्रसार किया जाता है।

निष्कर्ष :

जहाँ तक पुरूष इस पितृसत्तात्मक संरचना एवं इसकी क्रियाओं से व्यवस्थित ढंग से एवं सर्वसम्मति से लाभान्वित होते हैं वहाँ तक इन संस्थाओं को यह अस्वीकार करती हैं। निश्चित रूप से पितृसत्ता शक्ति का एक प्रभावशाली स्वरूप है जिसे नारीवादियों ने चुनौती दी है एवं यदि ये समकालीन समाज के साथ केवल सम्पर्क में भी बनी रहें तो व्यापक सामाजिक परिवर्तन लाने में मदद कर सकती हैं। इस प्रकार नारीवादियों ने पितृसत्ता को बेनकाब कर दिया है एवं शक्ति संरचना में अब परिवर्तन दिखाई दे रहा है,जो पितृसत्ता के प्रभुत्व में क्षीरता का द्योतक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.Bhasin Kamala,Understanding Gender(2000), Kali for Women, New Delhi,Page 5-22.
2.Bose Mandakranta,Ed.(2000), Faces of the feminism in Ancient, Medieval,and Modern india,Oxford University Press,New Delhi,Page 18.
3.Choudhuri,Maitrayee,Ed. (2000), feminism in India Kali for Women, New Delhi,Page 48.
4.Dube,M.P.,NeetaBora (1999),Social Justice in Women in India,Swaraj Prakhashan,New Delhi,Page-12.
5.Gould, Carol C.,Ed.(1997), Gender,Humanities Press,New Jersey,Page-81.
6.Lesile,Julia,MarryMcGee, (2000) Invented Identities the Interplay of Gender,Religiopn and Politics in India, New Delhi : Oxford University Press.
7.Menon,Nivedita, (1999)Gender and Politics in India, New Delhi: Oxford University Press,Page-39.
8.Meyers,TietjensDiana, (1997),Feminist Social Thought : A Reader, New York, Routledge Press,Page-72.
9.Ray,Bharti,Aparna Basu,(1999),From Independence Towards Freedom, New Delhi: Oxford University Press,Page -25.
10.Sangari,Kumkum,SudeshVaid,(1989),Recasting Women Essays in colonial History, Kali for Women, New Delhi,Page-12.
11.Shah,Ghanshyam,(Ed.2002),Social Movements and the State, New Delhi Sage Publication, Page-29.
12.Walby, S.(1990), Theorizing Patriarchy, New York: OUP,Page-130.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.oldisrj.lbp.world